

वैदिक दृष्टि से मानव जीवन का परम लक्ष्य— मोक्ष प्राप्ति

डॉ०तोशेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत)

शिक्षा विभाग

महावीर विश्वविद्यालय, पोहल्ली

सरधना रोड़ (मेरठ)

शोध सारांश

चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति॥ मनुस्मृति (12/97)

अर्थात् चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) तीनों लोक (स्वर्ग, पाताल, मृत्यु लोक यानि पृथ्वी लोक) तथा तीनों काल (वर्तमान, भूत और भविष्य) सब वेद से सिद्ध होते हैं।

इन चारों ही वर्णों के मानव जीवन का अन्तिम और परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। उसकी प्राप्ति का साधन ओर उपाय वेदों में निहित है। वेदों में मानव जीवन के उपयोगी चार पुरुषार्थ बताये गये हैं— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें व्यक्ति सत्य मार्ग पर चलते हुए, धर्म को धारण करते हुए, जीवन निर्वाह करने के लिए अर्थार्जन करता है तथा अपने वंश को आगे बढ़ाने के लिए काम शक्ति का उपभोग करता है तथा और अंत में इस मृत्युलोक के जन्म—मरण के बन्धन से मुक्त होने के लिए मोक्ष को प्राप्त करता है। 'मोक्ष' से अभिप्राय यह है कि— मनुष्य का इस संसार से सभी कर्म बन्धनों से मुक्त हो जाना है अर्थात् इस पृथ्वी पर मनुष्य अपने अच्छे—बुरे सभी कर्मों के अनुसार सुख—दुःख भोगने के पश्चात् मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होता है और यही मानव जीवन परम लक्ष्य कहा जाता है।

कुंजी शब्द— वैदिक दृष्टि, परम लक्ष्य एवं मोक्ष प्राप्ति

प्रस्तावना—

वास्तव में, यदि देखा जाय तो मनुष्य का जीवन सबसे जटिल, रहस्यमय और चिन्तनयोग्य विषय है अब यह प्रश्न उठता है कि मनुष्य क्यों पैदा हुआ? उसकी उत्पत्ति का उद्देश्य क्या है? और मनुष्य का जीवन किसके लिए है? यह प्रश्न केवल दार्शनिकों का ही नहीं, बल्कि प्रत्येक विचारशील मनुष्य का है। भारतीय मनीषियों ने इन प्रश्नों का समाधान अपने प्राचीनतम ज्ञान स्रोत—वेदों में स्पष्ट और सशक्त रूप में दिया है?

वेदों में कहा गया है कि यह सृष्टि किसी भी प्रकार से ईश्वर के मनोरंजन या स्वार्थ का परिणाम नहीं है, बल्कि यह नियमबद्ध, न्यायसंगत और उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। (ऋग्वेद 10.90 पुरुषसूक्त) कहता है कि विराट पुरुष (ईश्वर की सृष्टि प्रक्रिया) की व्यवस्था से ही यह जगल उत्पन्न हुआ है इसमें प्रत्येक प्राणी का निश्चित प्रयोजन है।

यजुर्वेद (40.1) उद्घोष करता है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्त्याजगतः।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम॥

अर्थात् यह सम्पूर्ण जगत ईश्वर से प्राप्त है। मनुष्य का जन्म केवल भोग विलास हेतु नहीं बल्कि ईश्वर—नियुक्त कर्तव्यों के पालन के लिए है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य का अस्तित्व धर्मपालन सत्य के अन्वेषण और मोक्ष प्राप्ति के लिए है।

भारतीय परंपरा में मनुष्य—जीवन के उद्देश्यों को चार पुरुषार्थ में विभाजित किया गया है— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

यहाँ धर्म पालन के लिए सत्य, न्याय के पथ चलते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की बात कही गयी है। तथा

अर्थ के लिए— न्यायोचित साधनों से अर्थार्जन करने की बात है। अर्थात् शुभ कमाई की बात की है गलत तरीके से, धोखे से, छल से धनार्जन नहीं करना चाहिए।

काम के विषय में वेद आदेश करते हैं कि मनुष्यों को अपने वंश को आगे बढ़ाने हेतु मर्यादित सीमा में कामेच्छा पूर्ति करनी चाहिए।

‘मोक्ष’ जो चारों पुरुषार्थ में अन्तिम और परम लक्ष्य है इसके विषय में वेद हमें यह आदेश देते हैं कि मोक्ष—आत्मा की मुक्ति और ईश्वर की प्राप्ति के लिए परमावश्यक है।

अथर्ववेद (11.8.32) में कहा गया है कि —

‘आत्मने मोक्षार्थं जगत् हिताय च।’

अर्थात् मनुष्य का जीवन आत्म ज्ञान, आत्म—उन्नति और जगत के कल्याण के लिए है। यही शिक्षा श्रीमद् भगवद्गीता (3.20) में दी गई है—

‘लोक संग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि’ — गीता

यहाँ पर श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि हे अर्जुन! लोकसंग्रह अर्थात् समाज कल्याण के लिए तुम्हें अपने कर्म करते रहना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष है, जबकि धर्म, अर्थ और काम उसके साधन हैं।

वेदों में मनुष्य की उत्पत्ति ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति का गहन दार्शनिक विवेचन मिलता है।

ऋग्वेद (10.129 नासदीय सूक्त) में कहा गया है कि सृष्टि के आरंभ में अस्तित्व था न अनस्तित्व; न मृत्यु थी न अमरता। केवल एक ही अनादि सत्ता—ईश्वर था, जिसकी शक्ति से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई। श्वेताश्वरोपनिषद (6.2) कहता है—

‘ये ब्राह्मणं विद्धाति पूर्वं वो वै वेदांश प्रहिणोति तस्मै।’

जो ईश्वर पहले ब्रह्मा को उत्पन्न करता है और वेदों का ज्ञान प्रदान करता है, वही इस जगत का नियन्ता है।

ब्रह्म के बारे में ऋग्वेद में कहा है— ‘प्रज्ञानं ब्रह्म’ अर्थात् चेतना ब्रह्म है।

यजुर्वेद में— ‘अहं ब्रह्मास्मि’ अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ।

अथर्ववेद में कहा है— ‘अय आत्मा ब्रह्म’ अर्थात् यह आत्मा ब्रह्म है।

अतः ईश्वर का स्वरूप निराकार है और आत्मा अजर है अमर है। उसी ईश्वर की शक्ति से ये सम्पूर्ण सृष्टि रची गई है तथा वही ईश्वर इसको अपने नियन्त्रण में रखता है।

जिस प्रकार मानव का शरीर पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) से निर्मित है। ठीक उसी प्रकार ईश्वर अर्थात् भगवान भी पाँच तत्वों से ही निर्मित है। भ—भूमि, ग—गगन, व—वायु, आ—आकाश, न— नीर। किन्तु आत्मा शाश्वत, अजन्मा और अविनाशी है। गीता (2.20) कहती है — ‘न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता भविता वा न भूयः।’ अर्थात् आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है। केवल शरीर बार—बार जन्म लेता है, मिटता है।

वेदों द्वारा मार्गदर्शन—

वेद स्पष्ट निर्देश देते हैं कि मनुष्य को जीवन में क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। वेद विहित और निषिद्ध कार्यों की विवेचना करते हैं और मानवों का हित साधने में भस्सक सहयोग देते हैं। वेद हमें निम्न निर्देश देते हैं:—

सत्य का अनुसंधान करना— ऋग्वेद (1.164.39) में लिखा गया है—

‘एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति’ अर्थात् सत्य एक है ज्ञानी/विद्वान पुरुष उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।

संगठित होकर समाज का कल्याण करना— ऋग्वेद (10.191.2) में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया है — ‘संगच्छध्वं संवदध्वं स वा मनासि जानतम्।’ अर्थात् वेद हमें सिखाते हैं कि सभी मानव मिलकर चले, मिलकर बोलें, सबके विचार एक होवे, सभी एक होकर सोचें।

ईश्वर की उपासना करना— यजुर्वेद (40.8) स्पष्टतः निर्देश दिया गया है कि ईश्वर निराकार है, शुद्ध, न्यायकारी और सर्वव्यापक है, उसे जानना ही मानव का परम धर्म है।

योग, तप, यज्ञ और ज्ञान से आत्मा का उत्थान करना— अथर्ववेद (19.41) में मानव कल्याण के लिए बताया गया है कि मानव योग और साधना से ही अमृतत्व को प्राप्त करता है अथवा कर सकता है।

निष्कर्ष—

वैदिक दृष्टि से मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है क्योंकि वेदों का सन्देश इस बात की पुष्टि करता है कि मनुष्य का जन्म केवल भौतिक सुख सुविधाओं और इन्द्रिय भोग के लिए नहीं, बल्कि श्रेष्ठ कर्म करने, आत्मज्ञान प्राप्त करने, लोककल्याण में योगदाप देने और अन्ततः ईश्वर प्राप्ति के लिए हुआ है।

मनुष्य जीवन एक अमूल्य अवसर है ईश्वर ध्यान और मोक्ष प्राप्ति के लिए। यदि हमने इस अवसर को विलासिता और भोग में गंवा दिया तो पुनर्जन्म के चक्कर में फंसा देगा। किन्तु यदि हमने इसे धर्म, योग, तप और सेवा में लगाया, तो यही जीवन मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आज जब भौतिकवाद और उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ में मनुष्य अपना असली जीवन उद्देश्य भूलता जा रहा है, तब से वेदों का यह सन्देश और भी प्रासंगिक हो जाता है।

जीवन का अर्थ केवल जीवन जीना नहीं, बल्कि सार्थक रूप से जीवन जीना है और जीवन की सार्थकता तभी है जब जीवन ईश्वर प्राप्ति और लोक—कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो।

अतः हम कह सकते हैं कि मनुष्य अपने तपोबल एवं ज्ञान की दिव्य ज्योति से ही तथा वेदों में दिये गये निर्देशों को पालन करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

- 1- मनुस्मृति (12.97)
- 2- ऋग्वेद (10.90 पुरुषसूक्त)
- 3- यजुर्वेद (40.1)
- 4- अथर्ववेद (11.8.32)
- 5- श्रीमद्भगवद्गीता (3.20)
- 6- ऋग्वेद (10.129 नासदीय सूक्त)
- 7- श्वेताश्वर—उपनिषद् (6.2)
- 8- ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद वहीं
- 9- गीता (2.20)
- 10- ऋग्वेद (1.164.39)
- 11- ऋग्वेद (10.191.2)
- 12- यजुर्वेद (40.8)
- 13- अथर्ववेद (19.41)